

वार्तिरि m. desgl. VĀGBH. 6, 45. — Vgl. वार्तिरि.

वार्ति (von वृत्ति) 1) adj. P. 5, 2, 101, Vārtt. 2. was besteht: a) einen Lebenserwerb habend H. an. 2, 193. fg. — b) gesund AK. 2, 6, 2, 8, 3, 4, 14, 78. TRIK. 3, 3, 182. H. 474. H. an. HALĀJ. 2, 225. वार्तिशरीरालम्भे तद्वातीया श्रेयोगात् SARVADARĢANAS. 100, 19. — c) gewöhnlich, mittelmässig: प्रशस्त, वार्ति, गृहितं ऋच. GRHJ. 2, 8, 3, 5. — d) werthlos, nichtig (फलम्, निःसार) AK. 3, 4, 14, 78. H. an. MED. I. 36. SARVADARĢANAS. 160, 11. 163, 4. अ० 100, 19. — 2) m. N. pr. eines Mannes MBH. 2, 321. — 3) f. अ) Lebensunterhalt, Erwerb, Gewerbe, insbes. das des Vaiçja d. i. Ackerbau, Viehzucht und Handel AK. 2, 9, 1, 3, 4, 14, 78. 29, 224. H. 863. H. an. MED. HALĀJ. 2, 415. M. 9, 326. वार्ति कर्मव वैश्यस्य 10, 80. वैश्यस्य तु तयो वार्ति 11, 235. JĀG. 1, 310. कश्चित्स्वनुष्ठिता तात वार्ति ते साधुभिर्नैः । वार्तिया संश्रितस्तात लोको ऽयं सुखमेधते ॥ MBH. 2, 213. वार्तिया धार्यते सर्वम्, त्रयी वार्ति दण्डनीतिस्तिष्ठो विद्या विज्ञानताम् 3, 11295. 12, 567. 2154. ०मूलो ह्ययं लोकः 2569. R. GORR. 1, 4, 6 (त्रयी वार्ति zu trennen). 2, 109, 24. KĀM. NĪTIS. 2, 1. 2. 3. 4. 7. पाशुपाल्यं कृषिः पण्यं वार्ति वार्तिनुजीविनाम् 14. वार्ति प्रजा साधयति वार्ति वै लोकसंश्रयः 13, 27. RAGH. 16, 2. VARĀH. BRH. S. 19, 11. PRAB. 28. 7. पापीयसो BHĀG. P. 1, 14, 3. 3, 6, 21. 7, 32. 12, 42. 44. 30, 12. विविधा 7, 6, 26. 9, 46 (pl.). वैश्यस्तु वार्तिवृत्तिः 11, 15. विचित्रा 16. वैश्यस्तु वार्तिया जीवेत् 10, 24, 20. कृषिवाणिज्यगोरक्षा कुसीदं तुर्यमुच्यते । वार्ति चतुर्विधा 21. 11, 8, 31. 23, 6. MĀRK. P. 49, 55. 57. 73. 75. 84, 9. ननु चतस्रो राजविद्यास्त्रयी वार्तिन्वीतिकी दण्डनीतिरिति DAÇAK. 183, 5. Am Ende eines adj. comp.: फलमूलवार्ति lebend von VARĀH. BRH. S. 3, 77. 15, 17. अग्नि० 6, 1. 17, 13. पण्यनीति० 10, 17. शस्त्र० 16, 13. शस्त्रपुस्त० 87, 37. — b) Kunde, Nachricht, Neuigkeit, Gerücht, Sage, Rede von Etwas AK. 1, 1, 5, 8, 3, 4, 14, 66. 78. 32 (29), 16. H. an. MED. HALĀJ. 1, 146. 3, 88. संश्राव्य वार्तिम् R. 3, 63, 28. ad MEGH. 113. श्रुत्वा संप्रामिकीं वार्ति भविष्यां स्वामिनं प्रति Spr. 3045. श्रुत्वा प्रदानवार्तिम् KATHĀS. 3, 36. 38, 120. 42, 87. BHĀG. P. 1, 16, 11. धनदेववाणिगैर्वार्तिम् — वेत्ति किम् KATHĀS. 64, 98. fg. RĀGA-TAR. 2, 114. उज्जयिनीवार्ति ज्ञातुम् KATHĀS. 13, 46. तस्थौ च वार्तिमन्विष्यन्म ततः पुत्रयोस्तयोः 42, 116. पत्युर्वार्ति विचिन्वती 56, 337. वार्ति को ऽपि न पृच्छति Spr. 4882. KATHĀS. 3, 107. 6, 125. VOP. 3, 6 (pl.). वार्ति गुरुना विवृणोति कः RĀGA-TAR. 3, 185. वार्ति व्यसर्जयत् 6, 270. अन्नस्य वार्तिम् — कीर्तय erzähle von BHĀG. P. 3, 1, 45. का शिशुजनस्य वार्ति कथयिष्यसि PAÑĀT. 93, 17. 233, 9. Hir. 64, 17. 79, 15. 83, 11. न काप्यन्या विद्यते वार्ति 100, 11. का वार्ति was giebt es zu erzählen? was giebt es Neues? 64, 16. 93, 19. अस्ति मकृती वार्ति 79, 16. Spr. 580. स्त्रीणां च हृदये वार्ति न तिष्ठति कदापि हि 394 (II). 3062. 4203. KATHĀS. 2, 52. 42, 149. UTTARAB. 112, 1 (151, 6). अद्वायाः कचिदप्येहा खलु मया वार्तिपि नाकर्णिता PRAB. 44, 10. कुशलिनी वत्सस्य वार्तिपि नो SĀH. D. 63, 8. RĀGA-TAR. 1, 9. 49. 337. 4, 371. उत्तमश्लोक० das Reden von BHĀG. P. 2, 3, 17. 4, 30, 19. 11, 6, 48. 7, 55. BHAR. NĀTJAC. 18, 47. 97. मिथ्या० PAÑĀT. 51, 21. ०व्यतिकर 130, 7. अस्तां तावत्सुब्यक्वार्ति 143, 24. 231, 21. तद्-कृन्निनाप बहुवार्तिया unter vielen Erzählungen ÇATR. 10, 126. मनुनाम् Geschichte BRAHMAVAIV. P. bei BURNOUF, BHĀG. P. I, XLVI. पुरातनी H. 239. मङ्गल्यागमुद्दिश्य वार्ति श्रुतिमुखरमुखानां केवलं पण्डितानाम् vom Aufgeben der Liebe kann nur bei — die Rede sein (vgl. den Gebrauch von

कथा) Spr. 2701. तत्र वार्ति शीलतृणस्य का 3309. 1690. KATHĀS. 64, 159. का तु वार्ति तन्मांसभक्षणो 26, 169. Spr. 2353. (तस्य) आयाप्यं राजपुरुषा वार्तिपापि न चक्रिरे so v. a. nicht einmal mit Worten, sie sprachen nicht einmal davon RĀGA-TAR. 2, 69. मम — अनया वार्तिपापि किं कार्यम् was habe ich mit ihr zu schaffen, sei es auch nur mit Worten? Z. d. d. m. G. 14, 371, 1 (mit weltlichen Dingen mag ich mich nicht befassen AUFRECHT). Am Ende eines adj. comp.: पृष्ट्रात्रिवार्ति KATHĀS. 32, 39. शनैर्विज्ञातवार्ति RĀGA-TAR. 3, 236. उत्तमश्लोकवार्ति redend von BHĀG. P. 1, 18, 4. — c) Geruchsempfindung Verz. d. Oxf. H. 231, a, 23. 26. — d) Bein. der Durgā Devī-P. 43 im ÇKDr. — e) = वार्तिकु Eierpflanze H. an. MED. — 4) n. Wohlergehen, Gesundheit TRIK. H. 474. H. an. MED. JĀDAYA bei MALLIN. zu KIR. 13, 34. सर्वत्र नो वार्तिमवेहि RAGH. 3, 13. वार्तिन्योग 13, 71. स पृष्टः सर्वतो वार्तिमाध्यत् (so die ed. Calc. 40) 13, 41. ÇIG. 13, 68. KIR. 13, 34. — Vgl. गलवार्ति, दुर्वार्ति, प्रति०, लोक०.

वार्तिक (wohl von वृत्त rund) m. die Eierpflanze, Solanum melongena (n. die Frucht) UĞGYAL. zu UNĀDIS. 3, 79. 4, 15. TRIK. 2, 4, 27. HARIV. 7842. SUÇR. 1, 72, 4. 137, 15. 221, 20. 228, 20. 2, 508, 9. VĀGBH. 6, 78. Auch वार्तिकी f. AK. 2, 4, 4, 2. TRIK. 2, 4, 28. वार्तिकवभिषवाः MĀRK. P. 32, 26. — Vgl. कटुवार्तिकी, नुद्र०.

वार्तिकिन् 1) m. = वार्तिक BHAR. zu AK. nach ÇKDr. — 2) वार्तिकिनी f. dass. AUŠH. 57. RATNAM. in NIGH. PR. Vgl. नुद्र०.

वार्तिकु UNĀDIS. 3, 79. m. dass. TRIK. 2, 4, 27. SUÇR. 1, 221, 5. 2, 36, 14. 129, 11. 368, 6. 331, 9.

वार्तिपाति m. Herr —, Verleiher des Lebensunterhalts BHĀG. P. 4, 17, 11. वार्तिपय (वार्ति + अ०) m. Kundschafter, Späher TRIK. 2, 8, 25. H. 734. वार्तिरम्भ (वार्ति + अ०) m. Gewerbe M. 7, 43.

वार्तिवरु (वार्ति + वरु oder आवरु) m. ein umherziehender Krämer (Neuigkeiten bringend) AK. 2, 10, 15. H. 364.

वार्तिशिन् (वार्ति + शिन्) adj. Nachrichten essend so v. a. von Klatscherei lebend, Neuigkeitskrämer, Schwätzer; = भोजनार्थं यो गोत्रादि वदति स्वकम् H. 836.

वार्तिकर m. Ueberbringer einer Nachricht, Bote TRIK. 3, 3, 431.

वार्तिकर्तृ m. dass. BHĀG. P. 4, 9, 38.

वार्तिक (von वार्ति und वृत्ति) = वृत्ति साधुः gāṇa कथादि zu P. 4, 4. 102. = वृत्तिमधीते वेद वा gāṇa उक्थादि zu P. 4, 2, 60. 1) adj. ein Gewerbe betreibend, Gewerbsmann: दुर्गता वार्तिकजनो लोभातिकं नाम नाचरेत् KATHĀS. 34, 76. — 2) m. Kundschafter, Bote TRIK. 2, 8, 25. MBH. 10, 174. 200. — 3) m. Giftarzt, Beschwörer; = नरेन्द्र HALĀJ. 3, 54; vgl. वार्तिकेन्द्र. — 4) m. ein Vaiçja RĀGAN. im ÇKDr. — 5) m. = वार्तिकी die Eierpflanze ÇABDAR. im ÇKDr. — 6) f. अ = वार्ति Erwerb, Gewerbe MBH. 3, 17399 (vgl. 17401). am Ende eines adj. comp.: मोक्ष० so v. a. betreibend, obliegend 12, 12027. देहभर० das Gewerbe eines — treibend so v. a. nur daran denkend den Leib zu ernähren BHĀG. P. 5, 3, 3. so wird wohl auch विद्याजम्भक० MBH. 3, 2470 zu fassen sein; NILAK. dagegen erklärt: विद्या मन्त्रयत्नादिद्वया जम्भक औषधिसाधनानि तद्वाती-प्रियाः. — 7) n. Ergänzungen und Berichtigungen zu einem Sūtra: उक्तानुक्तदुक्तार्थचिन्ताकारि तु वार्तिकम् H. 236. वार्तिकमिति । सूत्रे ऽनुक्तदुक्तचिन्ताकारत्वं वार्तिकत्वम् NĀGŌ. bei BALLANT. MAHĀBH. 213. Co-